30 / 11 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

स्वमान की अनुभूति करना

➢➢ श्रेष्ठ स्वमान का स्वरुप बनना

➳ _ ➳ मैं पदमापदम भाग्यशाली आत्मा हूं

→ आलमाइट अथॉरिटी की संतान

■ मास्टर आलमाइटी हूं

➳ _ ➳ स्वयं भगवान ने भाग्य लिखने की कलम हाथ मे दे दी

→ जितनी चाहूं जैसी चाहूं बना सकती हूं

■ वाह मेरा भाग्य वाह

→ एक बाप की याद मे रह

→ कल्प कल्प का भाग्य बना रही हूं

→ कितनी भाग्यशाली हूं !!

■ स्वयं बाप को भी नाज है

■ विश्व के आगे पूजनीय हूं

➢➢अपने पूज्य स्वरुप का अनुभव करना

➳ _ ➳ मै इष्ट देव/देवी हूं

→ भक्त लोग मंदिरों में खडे है

■ दर्शन मात्र के प्यासे

■ सुख शांति के लिए

■ अपनी मनोकामना पूर्ण के लिए

→ मैं आत्मा अपने पूज्य स्वरुप मे स्थित हूं

→ मंदिर मे सजी सजाई मूर्त

→ बाबा से सर्वशक्तियों की किरणें लेकर

→ भक्त आत्माओ को दे रही हूं

■ भक्तो की आस पूर्ण हो रही है

■ सुख शांति का अनुभव कर रहे है

■ उनके दुख दर्द दूर हो रहे है

■ मनोकामनाएं पूर्ण हो रही है

➢➢श्रेष्ठ भाग्य की अनुभूति करना

➳ _ ➳ श्रेष्ठ संकल्पों द्वारा चैतन्य चित्र देख रही हूं

→ मैं आत्मा चेतन्य मे ऐसी शक्तिशाली बन रही हूं

■ भक्त लोग अभी तक दर्शन को प्यासे है

■ माला का सिमरण कर रहे है

■ मैं आत्मा विजय माला का मनका हूं

➳ _ ➳ बापदादा को हर मनके पर नाज है

→ हर बच्चे पर नाज है

→ चाहे वो लास्ट बच्चा है

■ सत बाप को जाना है

■ सत बाप के बने है

➳ _ ➳ पारसनाथ बाप के संग से लोहे से पारस बन रही हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा श्रेष्ठ स्वमानधारी हूं

→ श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर सेट रह

- सदा निर्माण
- सबको मान देने वाली
- दातापन का भाव रखने वाली
- सदा रहमदिल हूं

➠ _ ➠ स्वमान मे रहने से देह अभिमान समाप्त हो रहा है

→ किसी के प्रति संकल्प मात्र में भी रौब नही

- ऐसा क्यों
- ऐसा नही करना चाहिए
- ऐसा नही होना चाहिए
- ज्ञान तो ये नही कहता

→ स्वमान मे रहने से सूक्ष्म रौब का अंश भी समाप्त हो गया है

➠ _ ➠ बस रहमदिल दातापन का भाव

→ सभी को मान दे रही हूं

→ मान देकर ऊपर उठा रही हूं

➢➢ मैं दृढ स्वमानधारी आत्मा हूं

➠ _ ➠ मैं पुण्य आत्मा हूं

→ महान व श्रेष्ठ कर्म कर रही हूं

- गिरे हुए को उठाना
- गिरे हुए को सहयोगी बनाना
- परवंश को स्वतंत्र बनाना
- किसी की कमी को न देखना

→ शुभ भावना और शुभ कामना से

→ कमी को परिवर्तित कर रही हूं

➠ _ ➠ मैं आत्मा सम्पन्न हूं

➠ _ ➠ स्वमान का स्वरुप बन मालिकपन की स्टेज पर अनुभव कर रही हूं